सनातन संवर्धिनी

द्वितीय वर्ष - द्वितीय अंक

भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी

संस्थापक

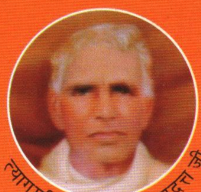

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी

संयोजक

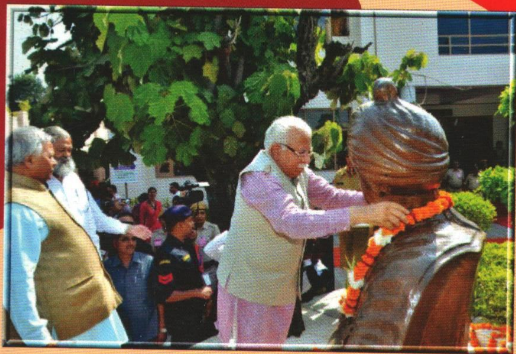

सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर) अम्बाला छावनी के शताब्दी समारोह श्रृंखला में उपस्थित हरियाणा के महामहिम राज्यपाल प्रोफेसर कप्तान सिंह सोलंकी एवम् माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी

धर्मे ते धीयतां बुद्धिः

मनस्ते महदस्तु च

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

(कार्यक्षेत्र: दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालय: भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाष: 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालय: गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैकटर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाष: 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार: 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. राज पाल विज

एस.डी.फुल्लर्वान गर्ल्स सी. सै. स्कूल, जालन्धर के वार्षिक समारोह-2016 की झलकियाँ

गीता सुगीता कर्त्तव्या ....

श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय संस्कृति का अनन्यतम ग्रंथ है। पवित्रता एवं महानता की दृष्टि से इसे वेदों के समकक्ष माना गया है। वेद, उपनिषद्, शास्त्र, पुराण आदि ग्रन्थों में मानव जीवन के उपयोगी जितने भी सिद्धान्त या वाद वर्णित हैं वे सभी श्रीमद्भगवद् गीता में उपलब्ध हैं। भगवान् श्री कृष्ण ने पूर्ववर्ती समस्त शास्त्रों, धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों एवं ऋषि परम्परा से प्राप्त भिन्न-भिन्न विचारधाराओं के रूप में प्राप्त विपुल, विराट ज्ञानराशि का अमृतमय सार संगृहीत किया और उसे श्रीमद् भगवद् गीता के अठारह अध्यायों के सात सौ श्लोकों में सरस, सरल, सुबोध शैली में निबद्ध कर सर्वजन सुलभ बना दिया।

वेद समस्त शास्त्रों में मूर्धन्य हैं। वे मानव सृष्टि के आदि ग्रंथ और अपौरुषेय रचना हैं। उपनिषदों में वेदों का सार है। उपनिषद् रूपी गायों से ज्ञानामृत रूपी दूध (गीता) निकला है। इस ज्ञानामृत दुग्ध के दोग्धा भगवान श्री कृष्ण हैं और इस ज्ञानामृत रूपी दुग्ध का पान करने वाले अर्जुन जैसे हम सब सुधीजन (वत्स) हैं -

सर्वोपनिषदः गावो दोग्धा गोपालनन्दनः

पार्थो वत्सः सुधी र्भोक्ता दुग्धं गीताऽमृतं महत्।।

गीता की सारगर्भिता को व्यक्त करने के लिए इसे 'सर्वशास्त्रमयी' कहा गया है। ऐसा कोई भी शास्त्रीय सिद्धांत नहीं है जो लघुकलेवरी गीता में वर्णित एवं चर्चित न हो। गीता की महिमा अपरम्पार है। यह त्रिकालजयी रचना है जिसमें सभी कालखण्डों में विश्व के समस्त प्राणियों के मंगल एवं कल्याण की भावना निहित है। गीता के प्रथम शब्द '*धर्मक्षेत्रे*' तथा अन्तिम चार शब्दों - '*ध्रुवा नीतिः मतिर्मम*' में समस्त विश्व के कल्याण का सूत्र है। भगवान कृष्ण का विश्व के प्रत्येक युग एवं क्षेत्र के राजनयिकों को यह अमर उपदेश एवं संदेश है कि धर्मक्षेत्र में स्थिर नीति (ध्रुवा नीतिः) ही समस्त नीतियों में सर्वश्रेष्ठ है। यह मेरा (कृष्ण का) अभिमत है, अटूट सिद्धांत है। जो इस धर्मप्राण स्थिर नीति को अपनाएगा वह अल्पबल होते हुए भी पार्थ की भाँति सदा विजेता रहेगा और जो इसका अतिक्रमण करेगा वह सर्वसाधन सम्पन्न होते हुए भी दुर्योधन की भाँति पराजित होगा।

'गीता सुगीता कर्त्तव्या' श्लोकांश गीता के अध्ययन की प्रयोजनीयता व प्रासंगिकता को भी रेखांकित करता है। वेद एवं शास्त्र अतिविस्तृत हैं। उनका अध्ययन-अध्यापन जटिल एवं दुरूह है। उन्हें समझने के लिए वर्षों की ज्ञान साधना करनी पड़ती है फिर भी वे साधारणजन के लिए सहज बुद्धिगम्य नहीं हैं। इसके विपरीत गीता में गूढ़-गम्भीर दार्शनिक सिद्धांतों, रहस्यों एवं वादों को सरस, सरल शैली में वर्णित किया गया है। शुष्क-नीरस ज्ञान की अपेक्षा भक्ति रस से आप्लावित सरस-स्निग्ध ज्ञान में पाठक की अभिरूचि अधिक रहती है। गीता को पढ़ते-पढ़ते जब पाठक दार्शनिक सिद्धान्तों के विषय में पढ़ता है तो अपने ज्ञान को और अधिक बढ़ाने के लिए उस-उस दार्शनिक वाद से सम्बद्ध दार्शनिक ग्रंथों के अध्ययन में उसकी रूचि जागृत हो जाती है।

उक्त कथन की सत्यता के लिए गीता में उपलब्ध कुछ महत्त्वपूर्ण दार्शनिक सिद्धान्तों की सरसता एवं सुबोधता को प्रस्तुत करना समीचीन होगा। मीमांसा दर्शन में कर्म को समस्त लौकिक एवं पारलौकिक सुखों का साधन माना गया है। गीता में मीमांसा के इस सकाम-कर्मवाद की निष्काम कर्मवाद में परिणति हुई है। कर्महीनता की स्थिति या शास्त्र विरुद्ध कर्म के आचरण से शास्त्र-प्रतिपादित सकाम कर्म श्रेष्ठ है। पर सकाम कर्म राग-द्वेष-मोह आदि चित्त

मलों से म्लान होने के कारण परमानन्द प्राप्ति का साधन नहीं हो सकता। परमानन्द प्राप्ति के लिए कर्म में निहित फलकामना रूपी विष का परित्याग कर उसे अनासक्त भाव से करना होगा। कर्मयोग के इस सनातन सिद्धान्त को गीता में बड़े ही सरल शब्दों में बोधगम्य बनाया है –

"कर्मण्येवाऽधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुः भू, मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।"

"तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।"

गीता में कर्म और अकर्म की व्यवस्था में शास्त्र को ही एकमात्र प्रमाण माना गया है –

"तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याऽकार्यव्यवस्थितौ।"

उपनिषदों एवं ब्रह्मसूत्र में आत्म-परमात्म तत्त्व की नित्यता एवं अद्वैतता का सार गर्भित वर्णन गीता में उपलब्ध है –

अजो नित्यः शाश्वतोऽयम् पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।

ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।

न्याय-वैशेषिक दर्शन में ईश्वर को इस संसार का कर्त्ता माना गया है। गीता में भी भगवान श्रीकृष्ण का स्पष्ट अभिमत है –

"अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा।

पिताऽहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।।"

सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरूष नामक दो मूल तत्त्वों को स्वीकारा गया है। इनमें प्रकृति विकारी और पुरुष अविकारी है। पर अविकारी पुरुष अविद्या के कारण प्रकृति के समस्त क्रियाकलापों को स्वयं में आरोपित कर स्वयं कर्त्ता बन जाता है –

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।

अहंकारविमूढात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते।।

योगशास्त्र के समस्य तत्त्वों का भी गीता में मनोहारी और सारगर्भित चित्रण है। महर्षि पतंजलि के योग सूत्र के अनुसार चित्त वृत्तियों के निरोध का नाम योग है। गीता में इस परिभाषा को स्वीकारते हुए भी योग की अन्य व्यावहारिक परिभाषाएं दी गई हैं –

1. योगः कर्मसु कौशलम् 2. समत्वं योग उच्यते।

चंचल मन की चित्त वृत्तियों के निरोध का प्रामाणिक उपाय भी गीता में उपदिष्ट है –

असंशयं महाबाहो! मनो दुर्निग्रहं चलम्।

अभ्यासेन तु कौन्तेय! वैराग्येण च गृह्यते।।"

अनेक पौराणिक सिद्धान्तों का भी गीता में प्रामाणिक उल्लेख है। गीता में अवतारवाद की पौराणिक अवधारणा की संपुष्टि की गई है –

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदाऽत्मानं सृजाम्यहम्।।

परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे-युगे।।

इस प्रकार गीता के माध्यम से ज्ञान पिपासु पाठक वेदों के साथ-साथ मीमांसा, वेदान्त, सांख्य, योग, न्याय-वैशेषिक आदि शास्त्रों में भी पारंगत हो जाता है। गीता पाठ से ज्ञान की पिपासा उद्‌बुद्ध हो उठती है और उसी पिपासा की शान्ति के लिए ज्ञान पिपासु कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग की त्रिवेणी में स्नान करता हुआ अपनी पिपासा को शांत कर पाता है।

गीता की विषय व्यापकता इतनी अधिक है कि इससे कोई भी विषय अछूता नहीं है। गीता में गागर में सागर नहीं बल्कि बिन्दु में सिन्धु का समावेश है। यज्ञ, दान, तप, धर्म, योग के विविध रूप-कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग, श्रद्धा, विभूति, दैवी-आसुरी सम्पत्, प्रकृति-पुरुष, प्रकृति के विकार, माया, अविद्या, गुणत्रय, ब्रह्म की विराटता, सृष्टि सृजन, प्रलय, कालगणना, ऋषि परम्परा, वर्ण व्यवस्था, सामाजिक समरसता, जीवन जीने की कला आदि अध्यात्म एवं भौतिक जगत के प्रत्येक विषय पर गीता में बड़ा सटीक एवं प्रामाणिक चित्रण किया गया है। तभी तो कहा गया है -

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।

या स्वयं पद्‌मनाभस्य मुखपद्‌मात् विनिःसृताः

इस संसार में आसुरी शक्तियों के प्रति निरन्तर संघर्षरत रहते हुए धर्मयुद्ध में प्रवृत्त होना तथा प्राणपण से सत्य और न्याय की प्रतिष्ठा करना गीता का मूल मन्तव्य है। दैवी मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए यदि व्यक्ति को नितान्त आत्मीय जनों से भी धर्मयुद्ध करना पड़े तो उसे संकोच नहीं करना चाहिए। श्री मद् भगवद्‌गीता व्यक्ति के मनोबल को बढ़ाने वाला ग्रंथ है। भगवान का स्पष्ट कथन है - 'निराश और हताश होने की आवश्यकता नहीं, व्यक्ति को अपनी सुप्त दैवी शक्तियों को जगाकर अपना उद्धार स्वयं करना है -

उद्धरेद् आत्मनाऽऽत्मानम् नात्मानमवसादयेत्।

भगवान् कृष्ण ने अर्जुन का उद्‌बोधन किया। उसे हताशा, अवसाद और मोह के बन्धन से मुक्त कराकर लोकसंग्रह के लिए धर्मयुद्ध हेतु तैयार किया। आधुनिक मनोवैज्ञानिक शब्दावली में इसे कोऊँसलिंग कहते हैं। इस प्रकार गीता आधुनिक मनोविज्ञान एवं परामर्श विज्ञान की दृष्टि से भी उत्कृष्ट कोटि का ग्रन्थ है।

हर्ष और गर्व का विषय है कि हरियाणा सरकार एवं केन्द्र सरकार ने गीता की अपार महिमा को समझा है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं उनके मंत्रीमण्डल के समस्त सहयोगियों के सौजन्य से हरियाणा प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी ने अपने सत् प्रयासों से मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की मोक्षदा एकादशी के दिन प्रतिवर्ष मनाई जानी वाली गीता-जयन्ती को दिनांक 6 दिसम्बर 2016 से 10 दिसम्बर 2016 तक पंचदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का स्वरूप प्रदान कर श्रीमद् भगवद् गीता को वैश्विक पहचान दिलाई है। 25 से अधिक देशों के मनीषी विद्वानों एवं हजारों कृष्ण भक्तों के साथ-साथ दस लाख से अधिक भारतीयों ने इस अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव में अपनी उपस्थिति से यह प्रमाणित किया कि निस्वार्थ भाव से सेवा कर्म का संदेश देने वाली श्रीमद् भगवद् गीता के मंगलमय सिद्धांतों को अपनाकर ही विश्व की समस्त ज्वलन्त समस्याओं का समाधान संभव है। अन्तर्राष्ट्रीय गीता जयन्ती महोत्सव के चिर प्रतीक्षित सत् संकल्प को पूर्णता प्रदान करने के लिए सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी.) केन्द्र सरकार एवं हरियाणा सरकार के प्रति विनीत भाव से कृतज्ञता व्यक्त करती है।

- डॉ० नन्द किशोर शर्मा

प्रधान सम्पादक

श्री लक्ष्मी है – सरस्वती

अमृतभाव सोमप्रधान है जिससे यज्ञकर्म्म का स्वरूप सम्पन्न होता है। मृत्युभाव कालकूट विषात्मक है जिस से यज्ञकर्म्म का स्वरूप छिन्न-भिन्न होता रहता है। कालकूट महाविष भी उसी प्रकृति की पैदाइश है एवं सोमामृत भी उसी की पैदाइश है। तीसरे द्युलोक में अवस्थित गन्धर्व अमृत-सोम की रक्षा कर रहे हैं एवं साथ ही विनता के पुत्र प्रचण्ड विषधर नागों ने भी इस सोम को रक्षणा कर रखा है। परमेष्ठी ही वह तीसरा द्युलोक है जिसमें आपोमय पारमेष्ठय समुद्र के सौम्य-विशेषका नामक गन्धर्व हैं। परमेष्ठी के सर्पणशील वायव्य प्राण ही वे विषधर अनन्त-वासुकी-कर्कोटकादि नाग हैं।

समुद्र मन्थनकर्म से सर्वप्रथम कालकूट नामक हालाहल-विष ही उत्पन्न होता है जिसका आदिदेव भगवान महादेव पान कर लेते हैं। पारमेष्ठय अन्नसोमात्मक अमृत से समन्वित विष का पान कर सचमुच महादेव नीलकंठ ही प्रमाणित हो रहे हैं। वह पारमेष्ठय रूद्राग्निमूर्ति सौर सावित्राग्नि में ही आहुत होता है, जिस सोम का विषभाग सौरसावित्राग्रि के द्वारा सौरमण्डल में ही नियंत्रित हो जाता है। अतएव मानव सायं प्रात: जिस अन्न की शरीराग्नि में आहुति देता है उसमें भी विष की मात्रा समाविष्ट है। कहते हैं-भुक्तान्न की वह विषमात्रा गले से नीचे नहीं जाने पाती। ललाटप्रदेश में स्थित आध्यात्मिक महादेव के द्वारा विषयन्त्रमाध्यम से अन्न का वह विषभाग मानवग्रीवा में नियंत्रित होता हुआ ऊर्ध्व हो जाता है एवं विषरहित शुद्ध अमृतरसगामी ही मानव के आध्यात्मिक प्राणाग्निदेवताओं का संरक्षण करता है। ग्रीवा में जो एक अस्थि है, वही वेद में 'विषयन्त्र' कहलाई है। यहीं पर भुक्त-अन्न के अमृत (सोम) और मृत्यु (विष) का विभाजन होता है। और यों प्रजा विषशून्य अमृतान्न आहुति ग्रहण में समर्थ बनती रहती है।

पारमेष्ठय विषाक्तप्राणरूप वायव्य तत्व ही वह नाग है, जिसके द्वारा स्कम्भरूप मन्दराचल पर्वत मथनी बनता है। इससे समुद्रमन्थन होता है, जिसकी एक विशेष प्रसूति का नाम ही 'महालक्ष्मी' है।

आपोमय परमेष्ठी में जहां इसी शक्तित्व का व्यक्ताव्यक्त स्वरूप प्रतिष्ठित है तत्पर अवस्थित प्राणमय स्वयम्भू में इसी प्रकृति का केवल अव्यक्त स्वरूप प्रतिष्ठित है, वहां व्यक्त स्वरूप तो एकमात्र सौरमण्डल में ही अभिव्यक्त हुआ है। अतएव 'लक्ष्मी' शब्द तो व्यक्तभाव का ही समर्थक बना हुआ है। इसका व्यक्ताव्यक्त रूप पारमेष्ठयरूप 'सरस्वती' कहलाता है, अव्यक्तरूप – स्वयंभू सम्बन्ध से 'काली' नाम से प्रसिद्ध हो रहा है। यों एक ही पराशक्ति-प्रकृतिदेवता अपने तीनों भावों से क्रमश: महाकाली, पारमेष्ठिलक्ष्मीरूपा महासरस्वती, सूर्यलक्ष्मी रूपा महालक्ष्मी, इन तीन महिमाभावों में परिणत हो रही है।

व्यक्ता-महालक्ष्मी के व्यक्त-आवासरूप-अपसमुद्र में भगवान् सूर्यनारायण प्रतिष्ठित है। 'अर्द्धह वै प्रजापतेरात्मनौ मर्त्यमासीत् अर्द्धममृतम्' इत्यादि श्रुति के अनुसार इस सूर्यप्रजापति का अर्द्ध-ऊर्ध्व' भाग अमृतप्रधान है एवं अर्द्ध अध: भाग मृत्युप्रधान है। सूर्य से पर-रसप्रधान परमेष्ठी एवं स्वयंभू – अमृतविश्व है एवं सूर्य से अध: बलप्रधान-चन्द्रमा और पृथिवी-मर्त्यविश्व है, जैसा कि 'तद्यत्किञ्च-अर्वाचीनतादित्यात्-सर्व तन्मृत्युनाप्तम् इत्यादि से प्रमाणित है। यों मध्यस्थ सूर्य ऊपर अमृतसूर्य तथा बीच मर्त्यसूर्य, भेद से दो भावों में परिणत हो रहे हैं। स्वयम्भू-अमृतविश्व कहलाता है एवं मर्त्या लक्ष्मी का सांकेतिक नाम है – लक्ष्मी। दोनों के मौलिक स्वरूप में महान्

अन्तर माना गया है। अमृतरस-प्रधाना लक्ष्मी ही श्रीः है, मर्त्यबलप्रधाना लक्ष्मी ही 'लक्ष्मी' है। दोनों ही सदाशिव विष्णुमूर्ति भगवान् सूर्यनारायण की अर्द्धांगिनी मानी गई है जैसा कि निम्नलिखित मन्त्रवर्णन से प्रमाणित है -

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यौ, अहोरात्रे पार्श्वे, नक्षत्राणि रूपं अश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णन्निषणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

पूरक-अमृत-मर्त्यभावापन्न श्री-लक्ष्मीभाव इस सम्वत्सर-आदित्य की 'पत्नी' कहलाई है। 360 अहःचितियां तथा 360 रात्रिचितियां, युक्त 720 संख्यायुक्त चितियां (अग्निसोमचितियां) ही इस संवत्सरपुरूष के उत्तर-दक्षिण पक्ष हैं। सोम (रात्रि) गर्भित अहः (अग्नि) चितिसमष्टि आग्नेय दक्षिणपार्श्व है एवं अग्नि गर्भित रात्रि चितिसमष्टि सौम्य वामपार्श्व है। अमृत-मृत्युमय, श्री लक्ष्मी-सहित सौरप्रजापति की आराधना-उपासना एवं कर्मानुगति से मानव के अभ्युदय निःश्रेयस्-संसिद्ध हो जाते हैं।

'श्री' का अर्थ है विद्या एवं 'लक्ष्मी' का अर्थ है 'भूतसम्पत्ति'। विद्या ही माता 'शारदा' है - भूतसम्पत्ति ही माता लक्ष्मी है। शारदारूपा श्री से युक्ता भूतसम्पत्ति ही माता लक्ष्मी है। शारदारूपा श्री से युक्ता भूतसम्पत्तिरूपा लक्ष्मी ही भारतीय सांस्कृतिक-लक्ष्मी का मौलिक स्वरूप है। श्री युक्ता लक्ष्मी ही यहां वास्तविक लक्ष्मी मानी गई है। धर्म्म-ज्ञान-वैराग्य-ऐश्वर्य-नामक भगसम्पतियां ही श्रीः हैं। यह अमृतसूर्यात्मिका है, जिसका अर्थ है - व्यक्ताव्यक्ता सरस्वती ही श्रीः है। 'रस' को ही वेदभाषा में श्री कहा गया है

अथ या एतेषां सप्तानां पुरूषाणां-श्रीः, यो रसः-आसीन्, तमुर्ध्वं समुदोहन्'

आत्मानुगत बौद्धिक-ज्ञानविभूति ही वह श्रीरस है जिससे मानव ऐश्वर्यशाली बना रहता है। कदापि केवल भूतसम्पत्ति का नाम ऐश्वर्य नहीं है। भूतसम्पत्ति तो निगमपरिभाषा में 'बर्हिवत् रूप पशुभाव ही माना गया है। इन्द्रियों से लक्ष्मीभूत-बाहय-परिग्रह का ही नाम लक्ष्मी हैं। जिनकी मूलप्रतिष्ठा वह 'श्री' मानी गई है, जिसके बिना भूतपरिग्रहरूपा लक्ष्मी सर्वथा निरर्थक ही प्रमाणित हुई है। जहां मूल में श्री (सरस्वती) नहीं रहती, वहां लक्ष्मी प्रवर्ग्यरूप में ही परिणत हो जाया करती है एवं श्री विहीना ऐसी लक्ष्मी कदापि निरापदरूप से स्वस्ति शान्तिपूर्वक भोग्या नहीं बन सकती।

अमृतमहिमात्रयी ही श्री लक्ष्मी है एवं मर्त्यमहिमात्रयी ही लक्ष्मी श्री है। श्रीरूपा लक्ष्मी ही सरस्वती है, लक्ष्मीरूपा श्री ही लक्ष्मी है। श्रीरूपा लक्ष्मी ही सरस्वती है, लक्ष्मीरूपा श्री ही लक्ष्मी है। दोनों की संयोजिका सौरसम्वत्सर की सौर अव्यक्ताशक्ति ही 'काली' है। और यों मर्त्य अर्द्ध विश्व में भी काली-सरस्वती-लक्ष्मी तीनों का भोग प्रमाणित हो रहा है। अमृतविवर्त में स्वयम्भू कालीस्थान है, सौम्यचन्द्रमा सरस्वती स्थान है एवं भूपिण्ड लक्ष्मी स्थान है। तीनों ही मर्त्यरूपों की समष्टि ही 'लक्ष्मी' रूपा मर्त्यालक्ष्मी है।

तभी तो लक्ष्मी के चित्रों के साथ सरस्वतीबिम्ब का समावेश अनिवार्य माना गया है।

- सुरेन्द्र कुमार जोशी
आर.ई.एस. (से.नि.)
सूरतगढ़
ज़िला श्रीगंगानगर

सनातन संस्कृति के पुरोधा : पं० दीनदयाल उपाध्याय

19वीं शताब्दी भारत की सांस्कृतिक उथल-पुथल की सदी है। ईसाई मिशनरी एवं इस्लाम धर्म हिन्दुओं को अनेक प्रलोभन देकर अपने-अपने धर्म में शामिल कर रहे थे। हिन्दू धर्म को हीन व तुच्छ बताकर अपने धर्म का डंका बजा रहे थे। उस समय पाश्चात्य सभ्यता के मोहजाल में पड़कर हिन्दु अपने धर्म से विरक्त होने लगे थे।

कलकत्ता के हिन्दु विश्वविद्यालय में शिक्षित नौजवानों ने हिन्दू संस्कारों व संस्कृति को ताक पर रख दिया था। सारी भारतीय सभ्यता हिल रही थी, चारों ओर सांस्कृतिक कोलाहल था। वह ऐसा समय था कि हिन्दुत्व-ईसाईयत-इस्लाम, सनातन धर्म, आर्य समाज सभी धर्म व मत आपस में टकरा रहे थे। पूरे देश में एक बेचैनी थी। धर्म का स्वरूप अस्पष्ट था। अंधविश्वासों ने सनातन धर्म और हिन्दुओं की दुर्दशा कर दी थी।

यही वह समय था जब सम्वत् 1920 (सन् 1863) में हरियाणा में रोहतक जिले के झज्जर कस्बे में पं. दीन दयाल शर्मा का जन्म हुआ। पिता इनके जन्म से पहले ही परलोक सिधार गए थे। माँ श्रीमती रजोवती देवी भगवान् कृष्ण की अनन्य भक्त थी। दादा गिरिधारी लाल, दादी एवं माँ की गोद में सुसंस्कारों को ग्रहण करते हुए पले-बढ़े दीन दयाल जी बचपन से ही असाधारण एवं विलक्षण बालक थे।

इन पर कुलदेवी सिंहवाहिनी भगवती माँ जगदम्बा की विशेष कृपा थी और वाणी में तो साक्षात् सरस्वती का वास था। दीनदयालु जी की प्रारम्भिक शिक्षा मौलवी से अरबी-फारसी में हुई। उन्होंने अपना प्रारम्भिक जीवन भी एक पत्रकार के रूप में आरम्भ किया। उन्होंने झज्जर से उर्दू में 'हरियाणा अखबार' और मथुरा से 'मथुरा अखबार' निकाला। वह लाहौर से प्रकाशित उर्दू के पहले दैनिक अखबार 'कोहेनूर' के भी सम्पादक रहे। 'भारत-मित्र' जैसे प्रतिष्ठित समाचार पत्र से भी जुड़े रहे परन्तु कुछ समय बाद ही पत्रकारिता का कार्यभार अपने मित्र मूर्धन्य पत्रकार श्री बालमुकुन्द गुप्त को सौंप कर पूरी तरह से धर्मक्षेत्र में कूद पड़े और पूरा जीवन देश, जाति, धर्म, हिन्दी एवं संस्कृत भाषा की समृद्धि, हिन्दी साहित्य की सेवा और गौवंश की रक्षा के लिए लगा दिया।

धर्मक्षेत्र में समर्पित पं. दीनदयालु शर्मा जी के जीवन में तीन घटनाएं अत्यंत महत्वपूर्ण हैं जिनके कारण उन्होंने अपना सर्वस्व धर्म व देश के लिए अर्पित कर दिया। एक बार की बात है - पण्डित जी तीर्थ-यात्रा करते हुए वृन्दावन आए और वहाँ उन्हें स्वामी नारायणनन्द के दर्शन हुए। यह एक चामत्कारिक घटना मानी जाती है। दीनदयालु जी परिक्रमा कर रहे थे, स्वामी जी की दृष्टि उन पर पड़ी, उन्हें बुलवाया और आते ही नाम लेकर पुकारा और कहा 'दीनदयालु तेरा जन्म धर्म की सेवा के लिए हुआ है, लेकिन जब तक तू संस्कृत नहीं पढ़ेगा, सेवा की योग्यता सीमित रहेगी। वहीं से उन्होंने संस्कृत पढ़ना आरम्भ कर दिया। अर्जित संस्कारों व तीक्ष्ण बुद्धि के कारण वह बहुत जल्दी संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित बन गए। अद्वैत वेदान्त और भक्ति के वैष्णव सिद्धान्त का अध्ययन करने के बाद स्वामी नारायण ने पण्डित जी को धर्म के पुन: जागरण का आदेश दिया।

दूसरी घटना आगरा में एक धार्मिक उत्सव में भाग लेने गए। आसपास के दर्शनीय स्थल देखते हुए फतेहपुर सीकरी पहुँचे। वहाँ थोड़ा सुस्ता रहे थे कि कोई मौका देखकर कोट और साफा उनके सिर के नीचे से निकाल कर ले गया। पास में रुपया पैसा कुछ न रहा। गर्मी के मौसम में पैदल ही आगरा के लिए चल पड़े। 4-5 मील चलने पर रात हो गई। कृष्ण पक्ष की चौदस अंधेरी रात में रास्ता दिखाई देना बन्द हो गया। रात के 12 बजे थे। एक खेत में छतरी देखकर वहीं आराम से पांव फैलाकर सो गए। थोड़ी देर बाद गहरीनींद में उन्हें अपनी छाती पर बड़ा बोझ मालूम हुआ और अर्धचेतनावस्था में जब आँख खुली तो देखा कोई काली सी भयानक चीज छाती पर हाथ डाले हुए है। उन्हें अपनी कुलदेवी माँ भगवती की याद आई, घबराकर माँ का ध्यान किया और पलक झपकने में सिंह पर सवार सुन्दर बिजली की तरह चमकती हुई हाथ में खड्ग लिए एक दिव्य ज्योति के दर्शन हुए जिसने उस भयानक मूर्ति को अपने खड्ग की

नोंक से दूर हटा दिया। पण्डित जी निर्भय होकर उठ बैठे और उस ज्योतिर्मयी मूर्ति के चरणों में सिर रख दिया। ऐसी ध्वनि हुई मानो दिव्य ज्योति ने आशीर्वाद दिया हो कि 'पुत्र उठो! तुम्हें किसी का डर नहीं, जब मैं तेरी रक्षा में हूँ। खड़े हो! धर्म की सेवा करने का व्रत लो।'' पण्डित जी ने ऊपर गर्दन उठाकर कुछ कहने की इच्छा की तो न वहाँ काली भयानक मूर्ति थी न वह ज्योति। उनके हृदय में अतुल बल आ गया। उनको यह ध्यान हुआ कि उनके जीवन का सम्बन्ध धर्म की सेवा से अवश्य है। बाद में उन्हें एक किसान की आवाज आई जिससे ज्ञात हुआ वह श्मशान की छतरी थी।

तीसरी घटना वह जब विद्याध्ययन के पश्चात् घर आए तो उनकी माता ने उन्हें आदेश दिया था – 'धर्म सेवा और समाज सेवा में स्वयं को समर्पित कर दो।'' फिर क्या था – पं. जी ने जीवन भर अपने तन-मन से इस व्रत व वचन का पालन कर स्वजननी, जगत्जननी एवं गुरु के ऋण को चुकाया।

केवल धर्म सेवा का व्रत लेकर पं. जी अकेले घूमने को निकल पड़े। 23 वर्ष की अवस्था पुष्ट शरीर, हृदय में धर्म सेवा की लगन, कोई परिचित नहीं। लखनऊ, कानपुर, बरेली, मुरादाबाद, सहारनपुर, जगाधरी आदि के दौरे किए। जब नए शहर में जाते तो उनका कोई जानकार न होता था पर जब वहां से विदा होते थे तो सैंकड़ो आदमी स्टेशन पर उनको छोड़ने आते और उनके जयकारों से स्टेशन को गुंजा देते थे। इन लोगों से मिलकर उन्होंने सभाओं की स्थापना का काम किया।

उस समय हरिद्वार में गंगा महिमा व गौ रक्षा के लिए तथा तीर्थ की महिमा के प्रचार के लिए सभा बनाई जिसमें सनातन धर्म के अनुसार तीर्थ, मूर्ति पूजा, अवतार, गंगा महिमा व गौ रक्षा के प्रचार प्रसार के लिए अधिवेशन किया गया। 'गोवर्णाश्रम हितैषिणी गंगा धर्म सभा' का कार्यालय कनखल में ही खोला गया। पंडित जी ने सनातन धर्म की बिखरी हुई शक्तियों को एक सूत्र में बाँधने का बीड़ा उठाया। जिसके लिए सनातन धर्म के एक भारत व्यापी महान् संगठन बनाने की युक्ति सूझी जिसमें धर्म को फिर से ऊँचा उठाया जाए, भारत की संस्कृति की रक्षा हो, भारत वर्ष में एकता स्थापित हो। इसीलिए भारत के धर्म और संस्कृति को केन्द्र में रखकर एक भारत व्यापी संगठन बनाने का भाव उनके हृदय में उत्पन्न हुआ। उस समय पंडित मदन मोहन मालवीय जी से कांग्रेस के अधिवेशन में उनकी भेंट हुई। उनसे पं. दीनदयालु जी काफी प्रभावित हुए और उनके सामने इस प्रस्ताव को रखा जिसे सुनकर मालवीय जी गद्‌गद् हो गए। दोनों में दृढ़ मैत्री सम्बंध बने और सनातन धर्म व शिक्षा जगत में मिलकर कार्य किया। हिन्दु विश्वविद्यालय काशी की स्थापना में उन्होंने मालवीय जी का पूर्ण सहयोग किया। सनातन धर्म कॉलेज लाहौर भी पं. दीनदयालु जी का सपना था जो मालवीय जी ने साकार किया। पं. दीनदयालु जी का अभिमत था कि भारत की संस्कृति से ही सच्ची राष्ट्रीयता की रक्षा होगी। संस्कृति के अध्ययन के लिए उन्होंने भारत के कोने-कोने में अनगनित सनातन धर्म स्कूल, कॉलेज, संस्कृत विद्यालय, कन्या पाठशालाएं, सनातन धर्म सभाएं एवं मन्दिरों की स्थापना की। भारत धर्म महामण्डल की स्थापना हुई। हरिद्वार में उसका अधिवेशन हुआ। उस समय वेदों, स्मृतियों, पुराणों आदि ग्रन्थों और हिन्दु सिद्धांतों के सम्बंध में अनेक प्रकार की शंकाएँ उठायी जा रही थीं। अनेक कुतर्क दिए जा रहे थे। उनका निराकरण करने के विचार से प्रश्नावली बनाकर विचारार्थ प्रस्तुत की। इन प्रश्नों के उत्तर आए। गंगादशमी के दिन हरिद्वार में भारत धर्म महामण्डल का अधिवेशन हुआ। पंडित जी ने गंगा की धारा में सब को खड़ा करके गंगा जल हाथ में लेकर यह प्रतिज्ञा कराई कि धर्म की मर्यादा बनाए रखने के लिए अपने प्राणपण से चेष्टा करेंगे। इस प्रतिज्ञा से लोगों के हृदयों में आत्मविश्वास बढ़ा और उनमें धर्म की रक्षा का भाव प्रबल हुआ। यह निश्चय हुआ कि श्रुति, स्मृति, पुराण प्रतिपादित सनातन धर्म के सिद्धांतों का देश में प्रचारकों द्वारा प्रचार किया जाए। संस्कृत के पठन-पाठन की कमी को दूर किया जाए। हिन्दी को बढ़ावा दिया जाए।

पं. दीनदयालु जी के भीतर धार्मिक उदारता थी। उन्होंने कभी किसी धर्म की आलोचना नहीं की। उन्होंने

समन्वय की राह पकड़ी, शास्त्रार्थ की नहीं। किसी को पराजित करके सन्तुष्ट होना उनकी प्रवृत्ति नहीं थी। अपना हृदय, अपने भाव, अपनी संस्कृति सबके सामने रखना उनका ध्येय था। उनकी वाणी में इतनी मधुरता थी, इतना आकर्षण था, इतनी संवेदना थी, करुणा थी कि उनके प्रवचन सुनकर जनसमूह की आँखों से अश्रु धारा स्वयं बहने लगती थी। कई बार सभाओं में वह हँसते हुए कह देते थे कि अपने रुमाल निकाल लो, मैं तुम्हें रुलाने वाला हूँ और सचमुच हर आदमी को आँख पोंछने के लिए रुमाल की जरुरत पड़ जाती थी। उनकी इसी वाक् कला के कारण उन्हें वाचस्पति की उपाधि दी गई।

पं. जी भक्त थे और भक्त का हृदय सारी मनुष्यता को ग्रहण करने वाला होता है। हिन्दुओं के साथ-साथ मुसलमानों के यहाँ भी उनका बहुत आदर था। तत्कालीन निजाम हैदराबादी आला हजरत महबूब आली के दरबार में भी उनकी कथा होती थी। वहाँ सोने की पालकी पर पंडित जी की सवारी निकाली गयी थी और इम्पीरियल सर्विस फौजों ने सलामी दी थी जो उस समय केवल वाइस राय के सम्मान में दी जाती थी। बहुत इज्जत करते थे पं. जी की। उस कथा में बैठते थे जिसे बाज़ कहा जाता था, निजाम पं. जी को जादूब्यानी के बादशाह कहा करते थे। मुस्लिम जगत् के प्रसिद्ध विद्वान मौलाना शिवली ने कहा था –

किसी की आँख में जादू
तेरी ज़बान में है।

इन दिनों मूर्ति पूजा, अवतार, तीर्थ, श्राद्ध, सदाचार, पतिव्रत धर्म की कड़ी निन्दा हो रही थी। माथे पर तिलक चोटी, गले में जनेऊ आदि देखते ही ब्राह्मणों को तिरस्कृत किया जाता था। कितनी ही पुस्तकें, मासिक, साप्ताहिक पत्र हिन्दू धर्म की निन्दा छापने में लगे थे। किसी भी राजा रईस आचार्य में इनका विरोध करने का साहस नहीं था। हिन्दुओं के मन में यह भय बैठ गया था कि उनके धर्म का आदर अब सम्भव नहीं। विरोधियों की प्रबल युक्तियाँ का उनके पास कोई उत्तर नहीं। उन दिनों लोग अपने को हिन्दू कहलाने में लज्जा अनुभव करने लगे थे। लाहौर नगर अहिन्दू नगर बना हुआ था। ऐसी दशा पंजाब के अनेक नगरों की थी। काशी, मथुरा, अयोध्या आदि स्थानों पर संन्यासी, महन्त, पंडित अपनी-अपनी गद्दियों का आनन्द ले रहे थे। वह अपने सुख को छोड़कर विरोधियों के आक्रमण और हिन्दु धर्म की रक्षा की ओर ध्यान भी नहीं दे रहे थे। सब अपने-अपने सुख और अभिमान में मस्त थे। तब तक स्वामी विवेकानन्द जी ने भी अमरीका जाकर हिन्दू वेदान्त का झंडा नहीं लहराया था। किसी में हिन्दू धर्म पर चर्चा करने का साहस नहीं था। सन् 1889 में पं. दीनदयालु शर्मा वहां भी व्याख्यान देने पहुंचे। व्याख्यान के लिए स्थान देने को कोई तैयार नहीं। एक मंदिर में मुश्किल से स्थान तय हुआ। पर उन्होंने भी बहुत ही अनुनय के बाद बिना किसी अन्य सुविधा के मात्र बैठने की जगह दी। स्वयं वहाँ पर अपने हाथों से दरियां बिछाकर जैसे-तैसे व्याख्यान दिया। पं. जी का जादू चल गया। अगले दिन चौंक में भाषण हुआ। श्रोताओं की संख्या एक हजार हो गई। सातवें दिन यह संख्या दस हजार से भी ज्यादा थी। छतों पर लोग बैठे थे। कहीं पांव रखने की जगह नहीं थी। विषय था – मूर्तिपूजा की महिमा। पंडित जी ने एक सप्ताह में ही उस अहिन्दू नगरी में सनातन धर्म का डंका बजा दिया। हिन्दू विरोधियों के रंग उड़ गए। लगातार 27 व्याख्यान होने के बाद वेद की सवारी निकाली गई, भारी उत्सव हुआ, मन्त्रों का पाठ, भजन कीर्तन, संस्कृत स्त्रोत पाठ करते हुए आधा मील के लगभग जलूस जब लाहौर की सड़कों पर इतर केवड़ा गुलाब फूल बरसाते हुए निकला, सारा लाहौर आनन्द सागर में गोते लगाने लगा। वहीं अहिन्दु लाहौर नगरी देवपुरी में परिवर्तित हो गई। लाहौर जो कभी हिन्दू धर्म का विरोधी था वहाँ एक बड़ी ताकतवर सनातन धर्म सभा बन गई। हिन्दु धर्म के विरोध की हवा छूमन्तर (खारिज) हो गई। इस प्रकार अपनी वाणी के बल पर पंडित जी ने सभी के दिलों को जीत हिन्दू-धर्म को गौरव प्रदान कराया। पूरे पंजाब में सनातन धर्म सभाओं की स्थापना की। संस्कृत व हिन्दी भाषा से उन्हें विशेष लगाव था। उन्होंने सनातन धर्म सभाओं को चेतावनी दी थी कि उनके सब काम हिन्दी में और देवनागरी अक्षरों में हों। वह देवनागरी का प्रचार-प्रसार सारे भारत में करना चाहते थे। उन्होंने कहा ''देवनागरी ऐसे अक्षर हैं जिनकी उत्पत्ति प्राकृतिक नियमों से स्वयं हुई है। इसके स्वर

और व्यंजन बड़े वैज्ञानिक आधार से विभक्त हैं।'' हमारी जितनी भी प्रान्तिक लिपियां हैं वह सब नाना प्रकार की ट्रेन के समान हैं जैसे थ्रूलाइन से सब ट्रेनें पास होती है वैसे ही देवनागर अक्षरों को थ्रूलाइन से सारे भारत की विविध प्रान्तिक भाषाओं तक पहुँचाओ। अर्थात् भारत के हर प्रान्त की भाषा की लिपि देवनागरी हो ताकि वह समस्त भारत में पढ़ी व समझी जाए, इससे अखण्ड भारत में अखण्ड एकता स्थापित होगी और भाषायी मतभेद खत्म होगा। 'देवनागर' नामक त्रैमासिक पत्र में यह प्रयास किया भी गया था। सन् 1929 में निजाम साहब ने एक फरमान जारी कर सभी प्राथमिक पाठशालाओं में केवल उर्दू पढ़ने की आज्ञा जारी की। इस पर हिन्दी, मराठी, तेलगू भाषी जगत में रोष फैल गया। पं. मदन मोहन मालवीय जी ने इस फरमान का विरोध करने के लिए हैदराबाद जाना चाहा। उनका भी रियासत में प्रवेश निषेध का फरमान जारी हो गया। तब पं. दीनदयालु शर्मा जी वहाँ गए। एक महीना ठहरे, 28 भाषण विभिन्न भागों में हिन्दी भाषा के पक्ष में दिए जिसके परिणामस्वरुप हिन्दी-मराठी माध्यम वाली 20 पाठशालाएं खुल गई। लोगों के मन में भी उत्साह पैदा कर फरमान का भय निकाला। निजाम उनके इस प्रयास से बहुत परेशान हुआ। परन्तु अपने वालिद के पूजनीय पण्डित जी का अनादर न कर सका और उसका फरमान बेकार हो गया। इसी प्रकार जब हैदराबाद में उर्दू युनिवर्सिटी बन गई तो हिन्दी को दबाया जाने लगा। तब भी हिन्दी सभा का आन्दोलन खड़ा करके वहां हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए बहुत परिश्रम किया था और अनाथ हिन्दू बालकों की रक्षा हेतु अपने व्याख्यानों के प्रभाव से एक बहुत बड़ा अनाथालय भी बनवाया था।

पण्डित जी ने शिक्षा की अनुपम शक्ति की महिमा बतलाते हुए कहा कि ज्ञान के द्वारा मनुष्य अपने सब प्रकार के शत्रुओं के भय से मुक्त होता है। ज्ञान का लक्ष्य है - आत्म को पहचानना। इस प्रकार आत्मज्ञान ही यथार्थ ज्ञान का लक्ष्य है जो धर्म में विश्वास से प्राप्त होता है। धर्म हमारी अन्तरात्मा का स्वरूप प्रकाशित करता है।

सभी धर्मों का उद्देश्य यही है ईश्वर को जानों और उसकी पूजा करो - ईश्वरी शक्ति तीन प्रधान रूपों में प्रकट हुई है - संसार की सृष्टा (ब्रह्मा) संसार का पालन पोषण (विष्णु) और सब अनर्थों और अज्ञान का संहार (शिव)। इसका अर्थ यह नहीं कि ईश्वर तीन हैं बल्कि ईश्वर एक ही है, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है। एक ईश्वर की विभिन्न शक्तियों को तीन रूपों में विभाजित किया गया है। यह हिन्दू और इस्लाम धर्म दोनों की समान रूप से शिक्षा है।

संसार में भी यह तीनों शक्तियाँ - माता-पिता (सृजन) गुरु या आचार्य (ज्ञान पालन पोषण) राजा (ईश्वर की संहारिका शक्ति) ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में स्थित है और इस पृथ्वी पर ईश्वरीय मर्यादा के नियामक हैं। पं. जी का कहना था। अनादिकाल से भगवान् की पाँच किताबें हैं जिसके ऊपर किसी धर्म या मजहब की मोहर नहीं है। ये पाँच पुस्तकें ही ईश्वर की वास्तविक धर्म की है - धरती, आकाश, जल, वायु, अग्नि। इन्हीं पाँच किताबों के साधनों से वह दुनिया को पालता है। उसके किए कोई अस्पृश्य नहीं है।

इस प्रकार हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान के उपासक पंडित जी बहुमुखी प्रतिभा के मालिक थे। वे समय की गति को पहचानने वाले उदार राष्ट्रीय युग पुरुष थे। सनातन धर्म व हिन्दू समाज के लिए जितना बड़ा काम उन्होंने किया इसके लिए हिन्दू समाज प्रातः स्मरणीय युग पुरुष का सदैव ऋणी रहेगा। आज फिर इस बात की आवश्यकता है कि सनातन धर्म के स्वरूप को हम अच्छी तरह से समझें और इस महान संस्कृति से मानव कल्याण का कार्य करें।

पं. दीन दयाल उपाध्याय द्वारा स्थापित परम्परा का पालन कर हिन्दू समाज के कल्याण व सनातन धर्म का प्रचार प्रसार का कार्य हम सभी का है।

- डॉ॰ (श्रीमती) विजय शर्मा
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग
एस.डी.कॉलेज (लाहौर), अम्बाला छावनी

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति (पंजीकृत) की रिपोर्ट

श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति पंजीकृत के तत्त्वावधान में संस्कृत भाषा एवं वैदिक कर्मकाण्ड के प्रचार-प्रसार के लिए एक विशेष कार्य योजना के अधीन सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में स्थित श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय में दिनांक 12 नवम्बर, 2016 को संस्कृत भाषण, श्लोकोच्चारण, श्लोकान्त्याक्षरी एवं मंत्रोच्चारण आदि विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हरियाणा प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के दशाधिक संस्कृत महाविद्यालयों के 60 से अधिक प्रतिभागियों ने इन विविध प्रतियोगिताओं में भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य संस्कृतपाठी विद्यार्थियों में भाषण कला एवं संगीतकला के प्रति अभिरूचि जागृत करने के साथ-साथ वैदिक मंत्रों के रूप में स्थित सनातन धर्म की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रति प्रतिबद्धता पैदा करना रहा है। स्वामी रामतीर्थ सभागार में माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री जगद्देव सिंह संस्कृत महाविद्यालय के छात्रों ने मंगलाचरण के रूप में स्वस्तिवाचन प्रस्तुत किया। संस्कृत कॉलेज के प्रबन्धक डॉ नन्दकिशोर शर्मा ने समारोह के अध्यक्ष डॉ देशबन्धु, निर्णायक मण्डल के माननीय सदस्यगण व अन्य संस्कृत विद्यालयों से पधारे शिक्षकों एवं छात्रों का अभिनन्दन करते हुए आधुनिक युग में संस्कृत भाषा के पठन-पाठन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए यह बताया कि संस्कृत भाषा में विद्यमान ज्ञान-विज्ञान के विस्तार के माध्यम से भारत आज भी विश्व गुरु बन सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सनातन धर्म शिक्षा समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष डॉ देशबन्धु ने छात्रों को शुभाशीष देते हुए कहा कि छात्र देश के भविष्य हैं। शिष्ट, सुसंस्कृत एवं अनुशासित छात्रों से ही सुन्दर, सुशिक्षित एवं सुशासित समाज एवं राष्ट्र का निर्माण संभव है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएं छात्रों के जीवन में उर्वरकता का कार्य करती हैं और छात्रों को अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए जागरूक बनाती हैं।

प्रतियोगिताओं के समापन पर विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए। श्री भगवान दास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार के छात्रों ने समस्त प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए सर्वाधिक अंक प्राप्त कर सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। डॉ देशबन्धु, डॉ नन्दकिशोर शर्मा, बहन अंजना व प्राचार्य डॉ राजिन्द्र कुमार गौनियाल ने अपने करकमलों से श्री भगवान दास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार के छात्रों को चलविजयोपहार प्रदान किया तथा अन्य विजेता प्रतिभागियों को भी पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। प्रतियोगिताओं का परिणाम इस प्रकार है -

भाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	छात्र के नाम	विद्यालय का नाम	प्रतियोगिता में स्थान
1.	गुरजीत सिंह	दीवान कृष्ण किशोर सनातन धर्म आदर्श संस्कृत कॉलेज (लाहौर) अम्बाला छावनी	प्रथम
2.	राजेश कुमार	श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	द्वितीय
3.	मनीष कुमार	श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय खडखड़ी हरिद्वार	तृतीय
4.	दिवाकर न्यौपाने	श्री जय भारत साधु संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	सान्त्वना
5.	शुभम नवानी	श्री जगद्देव सिंह सं. म. वि. सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार	सान्त्वना

श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता

क्र.सं.	छात्र के नाम	विद्यालय का नाम	प्रतियोगिता में स्थान
1.	दीपक वरियाल	श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	प्रथम
2.	तोता कृष्ण गौड	श्री जय भारत साधु संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	द्वितीय
3.	अमित बहुखण्डी	श्री जगद्देव सिंह सं. म. वि. सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार	तृतीय
4.	गुरजीत सिंह	दीवान कृष्ण किशोर सनातन धर्म आदर्श संस्कृत कॉलेज लाहौर, अम्बाला छावनी	सान्त्वना
5.	गौरव गैरोला	ऋषिकुल विद्यापीठ ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार	सान्त्वना
6.	सतीश जोशी	श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	सान्त्वना
7.	जीवन चन्द्र जोशी	श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय खडखड़ी, हरिद्वार	सान्त्वना
8.	दिवाकर न्यौपाने	श्री जय भारत साधु संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	सान्त्वना

श्लोकान्त्याक्षरी प्रतियोगिता

क्र.सं.	छात्र के नाम	विद्यालय का नाम	प्रतियोगिता में स्थान
1.	नित्यानन्द ममगाई	श्री जय भारत साधु संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार	प्रथम
2.	तोता कृष्ण गौड	श्री जय भारत साधु संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार	प्रथम
3.	रतीश जोशी	श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार	द्वितीय
4.	दीपक वरियाल	श्री भगवानदास आदर्श संस्कृत महाविद्यालय, हरिद्वार	द्वितीय
5.	मनीष कुमार	श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय खडखडी, हरिद्वार	तृतीय
6.	ललित मोहन भट्ट	श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय खडखडी, हरिद्वार	तृतीय
7.	कोमल नौटियाल	श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय खडखडी, हरिद्वार	तृतीय
8.	अंकित डोबरियाल	श्री जगद्देव सिंह सं. म. वि. सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार	सान्त्वना
9.	रविकान्त गौनियाल	श्री जगद्देव सिंह सं. म. वि. सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार	सान्त्वना
10.	हेमन्त दुदपुडी	श्री जगद्देव सिंह सं. म. वि. सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार	सान्त्वना

मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता

क्र.सं.	छात्र के नाम	विद्यालय का नाम	प्रतियोगिता में स्थान
1.	राहुल पुनेठा	ऋषिकुल विद्यापीठ ब्रह्मचर्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय हरिद्वार	प्रथम
2.	उमेश चन्द्र पनेरु	श्री ऋषि संस्कृत महाविद्यालय खडखडी हरिद्वार	द्वितीय
3.	अभिषेक रणाकोटि	श्री जगद्देव सिंह सं. म. वि. सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार	तृतीय

प्रतियोगिता के अन्त में विद्यालय के प्राचार्य डॉ. राजेन्द्र कुमार गौनियाल जी ने अध्यक्ष महोदय, संयोजक महोदय और निर्णायक डॉ. प्रकाश चन्द्र जोशी, डॉ. कुलदीपपन्त, डॉ. नारायण पंडित, आचार्य रामचन्द्र गोविन्द वैजापुरकर जी का साभार धन्यवाद ज्ञापन किया। इस कार्यक्रम में विद्यालय के प्राध्यापक डॉ. कमलेश काण्डपाल, डॉ. श्रीमती रश्मिशर्मा, श्री विवेक कुमार, श्री दिगम्बर प्रसाद बडोला, श्री रावेन्द्र कुमार, श्री गोपाल दत्त उनियाल, श्रीमती रश्मि किरण कपरूवान और कार्यक्रम के मंच संचालक डॉ. श्याम लाल गौड आदि उपस्थित थे।

– **डॉ. राजेन्द्र कुमार गौनियाल**, प्राचार्य

श्री जगद्देव सिंह स.म.वि. सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वार

मालवीय जी द्वारा संस्थापित महान शिक्षा संस्था के गौरवपूर्ण सौ वर्ष

सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर) अम्बाला छावनी उत्तर भारत की एक अद्वितीय शिक्षा संस्था है। कॉलेज के नाम के साथ जुड़ा 'लाहौर' शब्द इस महान शिक्षा संस्था के गौरवपूर्ण इतिहास को इंगित करता है। सनातन धर्म के आधार स्तम्भ भारत रत्न महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने सनातन संस्कृति के संरक्षण एवं शिक्षा प्रसार के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के साथ-साथ आज से 100 वर्ष पूर्व 16 मई 1916 को लाहौर में सनातन धर्म कॉलेज की स्थापना की। हर्ष का विषय है कि रजत जयन्ती, स्वर्ण जयन्ती और हीरक जयन्ती आदि सोपानों को पार करती हुई यह शिक्षा संस्था इस वर्ष अपना शताब्दी वर्ष मना रही है। इस उपलक्ष्य में एक First Day Cover भी प्रकाशित किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू तथा त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी एवं उनके समर्पित सनातन धर्मी अनुयायियों के सत् प्रयासों से अम्बाला छावनी में इस महान शिक्षा संस्था को पुनः स्थापित किया गया।

इस महान शिक्षा संस्था का अपना स्वर्णिम गौरवमय इतिहास है। आज यह कॉलेज नैक द्वारा 3.48 सी.जी.पी.ए. प्राप्त कर 'ए' श्रेणी की संस्था है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा इसे लगातार दूसरी बार College with Potential for Excellence की श्रेणी में रखा गया है। यह कॉलेज उत्तर भारत की एक बहुसंकाय, सहशैक्षिक स्नातकोत्तर प्रधान संस्था है। इसमें वर्तमान में 3300 विद्यार्थी एवं 125 शिक्षक हैं। यहां 23 स्नातक व 9 स्नातकोत्तर विषयों और 8 Add-on-Courses में शिक्षा दी जा रही है। यह कॉलेज देश के उन 32 अग्रणी कॉलेजों में है जिन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दीन दयाल उपाध्याय कौशल केन्द्र के लिए चुना गया है। हरियाणा में ऐसे केवल दो ही कॉलेज हैं।

हमारा पुस्तकालय ज्ञान की खान है जिसमें 60 हजार के लगभग पुस्तकें, संस्कृत की दुर्लभ पाण्डुलिपियों के साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जरनलज़ प्रिंट एवं इलैक्ट्रोनिक रूप में उपलब्ध हैं। कॉलेज की अपनी वैबसाइट है। Placement Cell (रोजगार प्रकोष्ठ) एवं Carrier Guidance Cell विद्यार्थियों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। पूरे परिसर में वाई-फाई की सुविधा है।

संस्था के परीक्षा-परिणाम सदैव उज्ज्वल रहे हैं। विश्वविद्यालय में प्रथम, द्वितीय स्थान के अतिरिक्त वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले अनेक विद्यार्थी कॉलेज के ज्ञान-गौरव में वृद्धि करते हैं। सांस्कृतिक गतिविधियों एवं खेलकूद में प्रादेशिक स्तर के साथ-साथ राष्ट्रीय स्तर पर अनेक उपलब्धियाँ अर्जित की गई हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में गत 39 वर्षों में 35 बार अम्बाला क्षेत्रीय युवा-समारोह का चलविजयोपहार कॉलेज ने प्राप्त किया है। एन.सी.सी. के कैडेट्स एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं-सेवकों ने गणतंत्र दिवस परेड में राजपथ पर अनेकों बार भाग लिया है। वर्ष में दो बार स्वैच्छिक रक्तदान शिविरों का आयोजन किया जाता है। सनातन-संचारिका कॉलेज की वार्षिक पत्रिका है। पूर्व विद्यार्थियों से सम्बंध बनाए रखने के लिए पूर्व विद्यार्थी परिषद् है।

कॉलेज द्वारा शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित अम्बाला क्षेत्रीय युवा समारोह में हरियाणा के माननीय मुख्यमन्त्री श्री मनोहर लाल खट्टर, कॉलेज के पूर्व विद्यार्थी स्वास्थ्य एवं खेल मंत्री भाई अनिल विज, पूर्व विद्यार्थी सांसद श्री रत्नलाल कटारिया एवं अन्य अनेक गणमान्य विभूतियों ने हमें अपना आशीर्वाद एवं सहयोग प्रदान कर कृतार्थ किया।

मैं इस महान संस्था से सम्बद्ध जन-जन को शताब्दी वर्ष की शुभकामनाएँ देता हूँ।

डॉ. राजिन्द्र सिंह, प्राचार्य
एस.डी. कॉलेज (लाहौर), अम्बाला छावनी

दि एस.डी. विद्या स्कूल, अम्बाला छावनी में Spic Macay का संगीत कार्यक्रम

दि. एस.डी. विद्या स्कूल अम्बाला छावनी के प्रांगण में Spic Macay सोसाइटी प्रोमोटिंग इंडियन क्लासिकल संगीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारम्भ हरियाणा के महामहिम राज्यपाल प्रोफ़ेसर कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा किया गया। एस.डी.कालेज सोसाइटी (लाहौर) अम्बाला छावनी के सफलतापूर्वक एक शताब्दी (100 वर्ष) पूर्ण होने के उपलक्ष्य में इस संगीत कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संगीत के सम्राट विश्व विख्यात पंडित विश्व मोहन भट्ट, ग्रामी अवार्ड कलाकार व उनके साथी तबला वादक श्री हिमांशु महंत ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रबंधक कमेटी के प्रधान श्री बी.के.सोनी, उपप्रधान डा. देशबंधु, निर्देशिका प्राचार्या श्रीमती नीलइंद्रजीत कौर संधु व अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

विद्यालय की बेंड टीम की छात्राओं ने बैंड की धुन पर महामहिम राज्यपाल का स्वागत किया। राष्ट्रीय कैड्ट कार्पस की छात्राओं ने परेड द्वारा मुख्य अतिथि को सलामी दी। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने सरस्वती वंदना, भक्ति संगीत एवं लोक वाद्यों के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

महामहिम राज्यपाल ने पंडित विश्व मोहन भट्ट जी को सम्मानित किया। महामहिम ने अपने उद्बोधन में भारतीय शास्त्रीय संगीत की श्रीवृद्धि करने के लिए Spic Macay सोसाइटी एवं दि एस.डी.विद्या स्कूल के योगदान की भूरि-भूरि प्रशंसा की। Spic Macay सोसाइटी प्रोमोटिंग इंडियन क्लासिकल संगीत व सांस्कृतिक कार्यक्रम पहली बार अम्बाला में आयोजित किया जा रहा है। इस का मुख्य उद्देश्य संगीत प्रेमियों को भारतीय सांस्कृतिक परंपरा से जोड़ना है। इस संगठन में युवा पीढ़ी स्वेच्छा से अधिक से अधिक मात्रा में जुड़ रही हैं। अम्बाला में दि. एस. डी. विद्या स्कूल प्रथम बार इस परंपरा को आरम्भ करने जा रहा है। भविष्य में सभी संगीत प्रेमी इसी कड़ी के द्वारा ही आगे इस परंपरा को बढ़ाएंगे। भारतीय शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम 'स्वरांजली' के तहत पंडित विश्व मोहन भट्ट की मोहन वीणा की धुन को सुनने के लिए भारी जनसमूह उमड़ पड़ा।

विद्यालय की निर्देशिका प्राचार्या श्रीमती नीलइंद्रजीत कौर संधु ने बताया कि आज की युवा पीढ़ी अपनी प्राचीन सभ्यता व संस्कृति को भूलती जा रही है। इस Spic Macay द्वारा यह युवा वर्ग अपनी भारतीय परंपरा को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठा कर समाज में जागरूकता लाने का प्रयास करेगा। उन्होंने विद्यालय में आए महामहिम राज्यपाल प्रोफ़ेसर कप्तान सिंह सोलंकी, कलाकार पंडित विश्व मोहन भट्ट व उनके साथियों का धन्यवाद किया जिन्होंने अपना अमूल्य समय इस विद्यालय को देकर इसे गौरवान्वित किया।

नीलइंद्रजीत कौर संधु, निर्देशिका प्राचार्या

पंडित मोहन लाल सनातन धर्म पब्लिक स्कूल, चण्डीगढ़
सी.बी.एस.ई. की वरीयता सूची में 73वें स्थान पर

यह हमारे लिए बड़े गर्व और हर्ष का विषय है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई दिल्ली द्वारा इनेबल इंडिया एजुकेशन के 26 अराजकीय संगठनों के सहयोग से 10+2 स्तर पर शिक्षा संस्थाओं की गुणवत्ता एवं परीक्षा परिणाम को आधार बनाकर कराए गए देशव्यापी सर्वेक्षण में हमारे स्कूल ने 73वाँ गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इस सर्वेक्षण में पूरे देश में सी.बी.एस.सी. से संबद्ध 16250 स्कूलों का सर्वेक्षण कराया गया था। हमारे स्कूल ने 2016 के परीक्षा परिणाम में +2 स्तर पर 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्रों की संख्या के आधार पर श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पूरे देश में 73वाँ स्थान प्राप्त किया। यह हमारी शिक्षा संस्था की एक विशिष्ट एवं महनीय उपलब्धि है। स्वयं सी.बी.एस.सी. ने हमारे विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को रेखांकित करते हुए अपनी वेबसाइट पर प्रदर्शित वरीयता सूची में हमारे स्कूल को 73वें स्थान पर अंकित किया है।

मोनिका शर्मा, प्रधानाचार्या

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी का 127वां जयन्ती समारोह

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा (पंजाब) और श्री मिथिलेश सनातन धर्म इंटर कॉलेज कनखल के संस्थापक त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की 127वीं जयन्ती कार्तिक शुक्लपक्ष की अक्षय नवमी 9 नवंबर 2016 को हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि ज्योतिषविद्, शिक्षाविद् और समाजसेवी डॉ. प्रदीप जोशी को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. प्रदीप जोशी को श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष और कॉलेज की प्रबंध समिति के अध्यक्ष सुधीर कुमार गुप्ता और कॉलेज के प्रबंधक सतपाल ब्रह्मचारी ने शॉल, स्मृति-चिन्ह तथा सम्मान-पत्र भेंट किया। इस अवसर पर महिला महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्या डॉ. गीता जोशी का भी शॉल ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया।

सुधीर कुमार गुप्ता ने कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी एक महान समाज सुधारक थे, उनके विचार हर युग में प्रासंगिक रहेंगे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम उठाए और पूरे देश में ढाई सौ से ज्यादा शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। गुप्ता ने कहा कि डॉ. प्रदीप जोशी जैसे शिक्षाविद् ज्योतिषाचार्य और समाजसेवी को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त सम्मान प्रदान करते हुए संस्था गौरवान्वित अनुभव कर रही है।

नगर पालिका के पूर्व अध्यक्ष सतपाल ब्रह्मचारी जी ने कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी का जीवन सच्चे अर्थों में त्यागमय था। वे महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और महामना मदन मोहन मालवीय जी के अत्यंत निकटतम लोगों में से एक थे। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में मालवीय जी के अधूरे कार्यों को पूरा किया। ब्रह्मचारी जी ने कहा कि डॉ. प्रदीप जोशी को त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की स्मृति में सम्मान प्रदान करना संस्था का एक अहम कार्य है। प्रदीप जोशी द्वारा समाज को प्रदान किए गए कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

कॉलेज की प्रबंध समिति के कोषाध्यक्ष और श्री गंगा सभा हरिद्वार के अध्यक्ष पुरूषोत्तम शर्मा गांधीवादी ने कहा कि गोस्वामी गणेश दत्त जी महान शिक्षाविद् थे।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. प्रदीप जोशी ने कहा कि त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की स्मृति में सम्मान पाकर वे बेहद गर्व का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि गोस्वामी जी एक महान क्रांतिकारी और युगपुरुष थे। छात्र जीवन की याद ताजा करते हुए डॉ. जोशी ने कहा कि वे एस.डी. इंटर कॉलेज के छात्र रहे हैं और आज कॉलेज के शिक्षकों और छात्रों के बीच अपने को पाकर वे बहुत भावुक हो गए।

इस अवसर पर कॉलेज के प्रधानाचार्य रविन्द्र कुमार मिश्रा, वरिष्ठ शिक्षिका मीनाक्षी शर्मा, प्रबंध समिति के सदस्य-बालेन्दु शर्मा, सुनील दत्त पांडेय, मनोज खन्ना, शिक्षक शेरसिंह, गगनवीर सिंह, अनिल शर्मा आदि ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक राजीव पंत ने किया। सप्तऋषि आश्रम भूपतवाला हरिद्वार में भी त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की जयन्ती धूमधाम से मनाई गई। उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया गया।

- सुधीर गुप्ता
उप प्रधान
श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब

त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेश दत्त जी की 59वीं पुण्यतिथि

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत के संयोजक तथा भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी के एकमात्र दीक्षित शिष्य त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की 59वीं पुण्यतिथि दिनांक 10 जून 2016 को सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में बड़े श्रद्धा भाव के साथ मनाई गई। सर्वप्रथम सप्त ऋषि आश्रम की यज्ञशाला में प्रातः आठ बजे से सनातन धर्म की परम्परा के अनुसार हवन किया गया। तत्पश्चात् सप्त सरोवर में गंगा तट पर स्थित गोस्वामी गणेशदत्त जी की समाधि पर भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आये हुये श्रद्धालुओं ने पुष्पमाला चढ़ाकर गोस्वामी गणेश दत्त जी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सप्त ऋषि आश्रम के स्वामी रामतीर्थ सभागार में विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस विचार-गोष्ठी में श्री पंचदास नाम जूनागढ़ अखाड़े के महामंत्री महंत देवानंद सरस्वती, महामंडलेश्वर जगदीश दास, महंत बाबा कमलदास एवं अनेक सन्तों के अतिरिक्त प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ शिव कुमार शर्मा, कार्यवाहक प्रधान श्री इंद्र मोहन गोस्वामी जी, महामंत्री श्री उपेन्द्र शर्मा, डॉ. देशबंधु, अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ. आर.पी. विज, महावीर दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री स्वरूप चन्द्र कौशिक, श्री गंगा सभा के अध्यक्ष पुरुषोत्तम शर्मा गांधीवादी ने अपने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए गोस्वामी गणेशदत्त जी को 20वीं शताब्दी का महामानव बताया।

श्री देवानंद सरस्वती ने कहा कि गोस्वामी गणेशदत्त जी ने सनातन धर्म के प्रचार के साथ-साथ देश में अनेक शिक्षा संस्थानों की स्थापना कर शिक्षा के प्रचार-प्रसार में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष डॉ. शिव कुमार ने कहा कि गोस्वामी जी ने आजादी के बाद पूरे देश में विस्थापितों को स्थापित करने के लिए तथा निःशुल्क शिक्षा देने के लिए अनेक शिक्षा संस्थानों की स्थापना की। गंगासभा के अध्यक्ष पुरुषोत्तम शर्मा गांधीवादी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि गोस्वामी जी निःस्वार्थ सेवाभाव के कारण हर कालखण्ड में याद किये जाएंगे। उन्होंने अपने गुरुवर मालवीय जी के अधूरे सपनों को पूरा किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ. नन्द किशोर शर्मा ने गोस्वामी जी की पुण्यतिथि पर दान देने वाले दानी सज्जनों के नामोल्लेख के साथ-साथ गोस्वामी गणेशदत्त जी के जीवन के संस्मरणीय प्रसंगों को प्रस्तुत करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। प्रतिनिधि सभा की ओर से गोस्वामी जी की पुण्यतिथि के अवसर पर सन्तों, महात्माओं, विद्यार्थियों एवं सामान्य भक्तजनों के लिए विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया।

श्रद्धेय पं. मोहन लाल जी की 17वीं पुण्यतिथि पर हुए कार्यक्रम की रिपोर्ट

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व प्रधान श्रद्धेय पं. मोहन लाल जी की 17वीं पुण्यतिथि प्रतिनिधि सभा के मुख्य कार्यालय भूपेन्द्र भवन, नई दिल्ली में मनाई गयी। इस अवसर पर सर्वप्रथम श्री राजेन्द्र प्रसाद पन्त ने मंत्रोच्चार के साथ श्रद्धांजलि कार्यक्रम प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम सनातन धर्म महावीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण जी ने पंडित जी के चित्र पर माल्यार्पण किया। तत्पश्चात् सभा के उप प्रधान श्री रमेश आनन्द जी, अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ. आर.पी.विज जी एवं उनकी धर्मपत्नी, मंत्री श्री डी.आर. मदान जी एवं उनकी धर्मपत्नी, संयुक्त मंत्री, डॉ. ओ.पी. डोगरा जी, श्री रिभुकान्त गोस्वामी जी, श्री चन्द्रशेखर गोस्वामी जी, श्री अशोक कत्याल जी, श्री अरविन्द विज जी एवं उनकी धर्मपत्नी, श्री सतीश गोस्वामी जी एवं सभा के सभी कर्मचारियों ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की तथा गायत्री मंत्र का जाप एवं दो मिनट का मौन धारण किया गया।

इसके पश्चात् प्रतिनिधि सभा के अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ. आर.पी.विज जी ने संक्षेप में पं. मोहन लाल जी, पं. अमरनाथ शर्मा जी, गोस्वामी गिरिधारी लाल जी, श्री चमनलाल जी कत्याल एवं अन्य पूर्व पदाधिकारियों के योगदान के बारे में भी बताया एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। डॉ. विज ने बताया कि पं. मोहन लाल जी एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं नेता होने के साथ-साथ उच्चकोटि के शिक्षाविद् एवं समाज सुधारक थे। उन्होंने सनातन धर्म के प्रचार प्रसार एवं शिक्षा के विस्तार के लिए अपने जीवन को समर्पित किया। सनातन परिवार उनके बहुमूल्य योगदान को सदा स्मरण रखेगा। उपस्थित सभी सदस्यों से प्रार्थना की कि यदि कोई अपने विचार रखना चाहे अथवा भजन प्रस्तुत करना चाहता है तो स्वागत है। श्रीमती निर्मला मदान जी एवं श्रीमती पेमिला विज जी ने सुन्दर भजन प्रस्तुत किये तथा डॉ. आर.पी. विज जी ने सनातन धर्म के विषय में एक बहुत ही मार्मिक भजन प्रस्तुत किया। महन्त स्वरूप बिहारी शरण जी ने पंडित मोहन लाल जी के बारे में बताया कि हमें उनके द्वारा किये गये कार्यों को आगे बढ़ाना चाहिए। उनके द्वारा किये गये कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता। समारोह के बाद सभी सदस्यों के लिए भोजन प्रसाद की व्यवस्था की गई थी।

– **डॉ० आर.पी.विज,** अर्थ एवं कार्यालय मंत्री

स.ध. प्रतिनिधि सभा (पंजाब) नई दिल्ली

श्रद्धांजलि

श्री राम प्रकाश बाली जी

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री राम प्रकाश बाली जी दिनांक 9 अक्तूबर, 2016 को अपनी इहलौकिक लीला सम्पूर्ण कर परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में लीन हो गये। सनातन धर्म व वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार, समाज के कल्याण और राष्ट्र के उत्थान में श्री बाली जी का सम्पूर्ण जीवन समर्पित रहा है। एक कुशल और स्वच्छ छवि के समन्वय वादी राजनीतिज्ञ एवं नेता के रूप में उन्हें सदा याद किया जायेगा। श्री बाली जी नंगल विधान सभा क्षेत्र से पंजाब विधान सभा के लिए विधायक के रूप में चुने गये। अपने क्षेत्र के चहुँमुखी विकास के लिए उन्होंने प्राणपण से कार्य किया। उन्होंने राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भावना तथा विशेषकर हिन्दू-सिक्ख एकता को बनाये रखने के लिए जन-सम्पर्क कार्यक्रम के अधीन सक्रिय भाग लिया। कांग्रेस हाईकमान के आदेश पर उन्होंने यूपी के सांसद श्री यादव, पूर्व रेलमंत्री श्री मुहम्मद शरीफ खुरैशी, अखिल भारतीय किसान प्रकोष्ठ के श्री रणधीर सिंह सांसद तथा पंजाब के माननीय मुख्यमंत्री एवं पी.पी.सी.सी.आई के प्रधान श्री बेअन्त सिंह के साथ जन सम्पर्क अभियान कार्यक्रम के अधीन पर्यवेक्षक का कार्य किया। लघु बचत योजना को प्रोत्साहित करने के लिए सन् 1960 में पंजाब सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। पीने के पानी और प्राथमिक स्कूल भवन निर्माण में विशेष सहयोग के लिए 1965 में तथा अपने क्षेत्र के चहुँमुखी विकास के कारण सन् 1962 में आपको पंजाब सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। इस महान् सेवा धर्मी एवं विकास पुरुष के दिवंगत हो जाने पर सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा की अपूरणीय क्षति हुई है। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब इनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुये श्री राम प्रकाश बाली जी की दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

श्री राम स्वरूप बागी जी

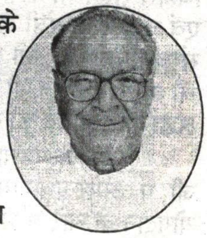

पठानकोट (पंजाब) के पूर्व विधायक सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के उपप्रधान श्री राम स्वरूप बागी जी 5 नवम्बर 2016 को अपनी सांसारिक यात्रा सम्पूर्ण कर प्रभु चरणों में विलीन हो गए। श्री बागी जी सनातन धर्म, शिक्षा, समाज एवं राष्ट्र की सेवा में आजीवन समर्पित रहे। इन्होंने 1980 से 1985 की अवधि में कांग्रेस के विधायक के रूप में पठानकोट क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और इस दौरान पंजाब विधानसभा के अनेक महत्वपूर्ण समितियों/उपसमितियों के सदस्य एवं पदाधिकारी रहे। इसके साथ ही पंजाब वेयर हाऊस कॉपरेशन के निदेशक, पंजाब सरकार की एक्साइज एण्ड टैक्सेशन सलाहकार समिति तथा राज्य परिवहन समिति के सदस्य रहे। पंजाब यूथ कांग्रेस के संस्थापक सदस्य के साथ-साथ वे पंजाब प्रदेश कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी रहे। शिक्षा के क्षेत्र में भी बागी जी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वे सरस्वती कन्या महाविद्यालय पठानकोट तथा हैप्पी हाई स्कूल पठानकोट के प्रधान के साथ-साथ अन्य अनेक शिक्षा संस्थाओं के आजीवन सदस्य रहे। इस महान सनातन धर्मी, समाजसेवी एवं शिक्षाविद् के दिवंगत हो जाने पर सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा की अपूरणीय क्षति हुई है। सनातन परिवार श्री राम स्वरूप बागी जी के परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हुए बागी जी की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

डॉ० नन्द किशोर शर्मा, मुख्य संपादक
10, अशोक विहार, महेश नगर
अम्बाला छावनी – 133 001
मो.: 9896589890

सदस्यता सहयोग प्रपत्र

मैं/हमारी संस्था ....

स्थायी पता ....

....

दूरभाष ....ई–मेल ....

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब (पंजी०) द्वारा प्रकाशित की जा रही "सनातन संवर्धिनी" नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के लिए 100/– रु० (एक सौ रुपये केवल) की सहयोग राशि प्रतिवर्ष प्रदान करने का संकल्प लेता हूँ/लेती है।

मैं/हमारी संस्था यह राशि नकद/चैक/ड्राफ्ट द्वारा श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, पंजाब (पंजी०) के नाम प्रेषित कर रहा हूँ/रही है।

हस्ताक्षर ....

नाम ....

पद ....

हमारा गौरव : हमारे शिक्षक

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ गुरदीप शर्मा

प्राचार्य, जी.जी.डी.एस.डी. कॉलेज, हरियाणा (होशियारपुर)

सीनेट सदस्य पंजाब विश्वविद्यालय, चड़ीगढ़ (2004–2020)

1882 से 2016 तक की अवधि में संयुक्त संकाय से सीनेट में चुने जाने वाले एकमात्र प्राचार्य

सिंडिकेट सदस्य पंजाब विश्वविद्यालय, चड़ीगढ़

(2006, 2009, 2012, 2014, 2015)

मोबाइल : 09417264184 ईमेल : principalggdsdc@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ निशा भार्गव

प्राचार्या, मेहर चंद महाजन डीएवी महिला महाविद्यालय

सेक्टर 36–ए, चंडीगढ़

निर्विरोध चयनित

सीनेट सदस्य पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

(20016–2020)

मोबाइल : 09815758400 ईमेल : principal_mcmdavcollege@yahoo.com

श्रीमती नीरज सैनी, प्रिंसीपल, एस.डी.फुल्लर्वान गर्ल्स सी. सै. स्कूल, जालन्धर को पंजाब सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग की ओर से शिक्षा और समाज सेवा के क्षेत्र में प्रशंसनीय सेवाओं के लिए शिक्षक दिवस पर राज्य पुरस्कार के रूप में प्रशस्ति पत्र और मैडल से सम्मानित किया गया।

स्कूल की प्रबंधक समिति ने भी दिनांक 28.11.2016 को स्कूल के वार्षिक समारोह में श्रीमती नीरज सैनी को 11000/- रु. एवं शाल भेंट कर उन्हें विशिष्ट सेवाओं के लिए सम्मानित किया।

सनातन धर्म शिक्षा समिति के तत्त्वावधान में सप्तऋषि आश्रम हरिद्वार में
आयोजित विविध संस्कृत भाषा प्रतियोगिताएँ

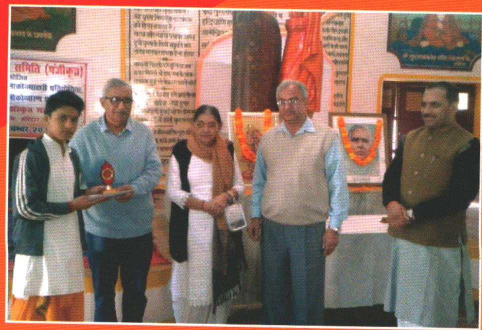

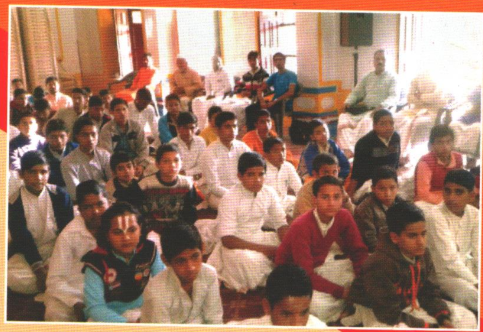

सालासर (राजस्थान) में निर्माणाधीन धर्मशाला का भूमिपूजन करते हुये
सनातन धर्म महावीर दल के प्रधान महन्त स्वरूप बिहारी शरण एवं अन्य पदाधिकारी